कुमारदास कृत जानकीहरण में कृदन्त पदों का प्रयोग वैशिष्ट्य

संस्कृत विषय में पी0एच0डी0 की उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रबन्ध
की प्रस्तावित
रूपरेखा
2019

शोध निर्देशक/विभागाध्यक्ष
प्रो0 (श्रीमती) अगम कुलश्रेष्ठ
संस्कृत विभाग कला संकाय

शोधार्थी
मोहित शर्मा
आचार्य (संस्कृत व्याकरण)
एवं बी0एड0

संकाय प्रमुख
प्रो0 जे0के0 वर्मा
कला संकाय

अध्ययन का क्षेत्र – संस्कृत व्याकरण

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
(डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा–282005

उद्देश्य –

संस्कृत भाषा और साहित्य के सम्यक् अध्ययन के लिए संस्कृत व्याकरण का पूर्ण ज्ञान आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। संस्कृत भाषा में व्याकरण शास्त्र का जितना सूक्ष्म, तर्कपूर्ण एवं विस्तृत प्रयोग है उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं है। व्याकरण के द्वारा ही शब्द के वास्तविक रूप और उसके अर्थ का यथावत् बोध होता है। व्याकरण भाषा की अर्थ भावना, पद रचना और वाक्य रचना में परस्पर सम्बन्ध संस्थापित करने वाली विविध प्रक्रियाओं और उनकी नियामिका शक्तियों का परिचायक होता है। संस्कृत भाषा के विशुद्ध एवं व्यवस्थित रूप ज्ञान के लिए व्याकरण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। साहित्यिक प्रयोगों की प्रमाणिक पुष्टि व्याकरण के द्वारा ही सम्भव है। साहित्य में व्युत्पत्तिपरक शब्द एवं शब्दार्थ का निश्चयात्मक बोध कराना व्याकरण का ही कार्य है। साहित्य की रक्षा, साहित्य की मर्यादा, सब कुछ व्याकरण द्वारा ही सम्भव है।

संस्कृत महाकाव्य परम्परा में कालिदास एवं कुमारदास ये दोनों महाकवि उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के समकक्ष प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। कुमारदास की केवल एक ही कृति "जानकीहरण" महाकाव्य प्राप्त होता है। इसमें 20 सर्ग हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार 25 सर्ग थे। (मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद, ओरियन्टल पब्लिसिंग कम्पनी बोम्बे)

कुमारदास ने "जानकीहरण" का कथा–बीज मुख्यतः वाल्मीकि रामायण से लिया है। इसकी पुष्टि अड्यार लाइब्रेरी, मद्रास में सुरक्षित मलयालम लिपिबद्ध पाण्डुलिपि के अन्त में प्राप्त इस पद्य से होती है।

जानकीहरणं श्लक्षणं लक्षणैरुपलक्षितम्।
रामायणसुधासारमास्वाद्यं मुक्तिदायकम्।।

कवि ने अपनी कृति के लिए रामायण के प्रथम 6 काण्डों को आधार बनाया है।

जानकीहरण की कुछ घटनाएं और वर्णन कालिदासकृत रघुवंश (सर्ग 9 से सर्ग 14 के 21 वे पद्य पर्यन्त) से भी उपकृत हैं।

ए0बी0 कीथ का इनके विषय में कथन है–'पण्डितम्मन्य न होते हुए भी "कुमारदास" व्याकरण के सूक्ष्म अध्येता थे उन्हें संदिग्ध रूपों की शुद्धता का निर्णय करने में एक प्रामाणिक

ग्रन्थकार माना जाना चाहिये।' (भूमिका "जानकीहरण" यदुनन्दन मिश्र चौखम्बा संस्कृत संस्थान पृष्ठ–11) कवि का यह व्याकरण–ज्ञान ही था जो स्थान–स्थान पर तत्सम्बन्धी संकेत एवं आक्षेपादि करने के लिये प्रेरित किया करता था।

1 यथा– "सुश्लिष्टसन्धी शुभ विग्रहौ तौ" (जा0ह01/35)

सुश्लिष्ट सन्धी–में कवि का व्याकरण ज्ञान दर्शनीय है जैसे –

सुश्लिष्टाः सुदृढ़ा : शोभना वा संधय : जत्रुः **(क) भुजा–पक्षे**कफोणि–मणिबन्धा आदयः सन्धिभागाःययोःतौ।–जो सुन्दर सन्धि–भागों वाली हो। भुजा के मुख्य तीन बन्ध (जोड़) जोते हैः–जत्रुबन्ध–जो कन्धे के पास भुजा को शरीर से जोड़ता है। कफोणि–बन्ध–जो कोहनी के पास हमारी भुजा के दोनों भागों को जोड़ता है। मणिबन्ध–जहाँ हाथ और पंजा जुड़ा होता है। **(ख) कवि–पक्षे–यस्य रचनायाम् शोभनाः श्लिष्टाः श्लेषयुताः सन्धियुक्ताः शब्दाः यत्र**जिसकी रचना में सुन्दर श्लेष और सन्धियों का समन्वय हो। **(ग)राज–पक्षे**–सुन्दर, सामदामदण्डभेदयुताः सन्धयः राजनीतयः यत्र– उचित और स्थिर 'सन्धि', (सामनीति–जन्य सन्धि–क्रिया) वाला।

एक अन्य उदाहरण दर्शनीय है यथा –

2. यथा– तपस्यद्भवनम(जा0ह01/72 पृष्ठ 27)

तपस्यतां जनानां ऋषीणामित्यर्थ : भवनं आवासभूतं इति तपस्यद्भवनम्तत्। तपस्वियों का निवासभूत। 'वनं' का विशेषण द्वितीया विभक्ति, एकवचन। यहाँ'तपस्यद्भवनं' से प्रयोजन 'तपोवन' से है। यह वह तपोवन है जहाँ कि अपने बूढ़े माता–पिता को तीर्थ यात्रा के प्रसंग में एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाता हुआ श्रवण कुमार इन दिनों ठहरा हुआ था। 'तपस्यद्भवनं जैसे प्रयोग संस्कृत साहित्य में बड़े विरल हैं। यह भी कवि के अप्रचलित–प्रयोग–प्रेम का एक उदाहरण है।।

कुमारदास वैदभी शैली के कवि हैं। इनकी भाषा में सरलता, प्रवाह और प्रांजलता है। भावों में विविधता और व्यापकता है। अलंकारों के लिए अलंकारों का प्रयोग नही है, तथापि अनुप्रास, यमक और अर्थान्तरन्यास अधिक मात्रा में प्राप्त है।

कुमारदास शब्दों के धनी ही नहीं, अविष्कारक भी थे। उनका उर्वर मस्तिस्क नितनूतन शब्दों को गढ़ कर काव्य के शब्द–वैभव को सुरूचिमय बनाये रखता है। वाल्मीकि के तनुच्छद्

(पंख) कालिदास के "अवर्ण" (लज्जा) और अजर्य (मैत्री) आदि शब्दों से प्रेरणा लेकर कुमारदास ने विरले प्रयोग वाले शब्दों की परम्परा को आगे बढ़ाया है यथा – वीर बहुटियों के लिए "कुलिशायुधगोपक" (जा0 ह0 11/46) पुरन्दरगोपक (जा0 ह0'11/77) तथा 'हरिगोपक' (जा0 ह011/89) आदि शब्दों का प्रयोग किया है।

धातुओं में कवि को 'तन्' धातु सर्वाधिक प्रिय है। जिसके विविध प्रयोग भारवि ने 60 बार, माघ ने 50 बार तो कुमारदास ने 80 बार किये है।

प्राक्तन कार्य–सर्वेक्षण

अनेक विद्वानों, विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों तथा संचार माध्यमों से अन्वेषण करने के उपरान्त मेरे संज्ञान में "जानकीहरण" में व्याकरणिक प्रयोग पर अब तक कोई कार्य नहीं हुआ है। केवल कुमारदास कृत "जानकीहरण" महाकाव्य–एक समालोचनात्मक अध्ययन पर संस्कृत विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद (उ0प्र0) 2002 में शोधकार्य हुआ है।

प्रविधि

शोध प्रबन्ध लिखते समय मुख्यतः विवेचनात्मक व वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जायेगा।

विषय चयन का उद्देश्य

प्रारम्भ से ही मेरी रूचि व्याकरण में रही है तथा मैंने व्याकरण में आचार्य की कक्षा उत्तीर्ण की है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से मैं जानकीहरण में क्लिष्टतम शब्दों को सरलरूप में परिवर्तित करके उन्हें अधिक से अधिक सरल बनाने का प्रयत्न करूँगा जिससे साधारण मति वाले पाठक भी इसे सरलता से समझ सकेंतथा भविष्य में व्याकरण के शाधार्थी भी लाभन्वित हो सकें और जानकीहरण के व्याकरणिक महत्त्व को असानी से समझ सकें यह सोच कर जानकीहरण को मैने अपने शोध का विषय बनाया है। मैं अपने शोध में इन्टरनेट, ई–बुक्स, गूगल, आदि माध्यमों से प्राप्त सामग्री का भी अध्ययन करूँगा। मैं विद्या की देवी **माँ सरस्वती** के चरण कमलों में उद्देश्य और रूपरेखा को स्वीकृति हेतु प्रस्तुत करता हूँ। आशा करता हूँ कि विद्वज्जन मेरे इस प्रयास का अनुमोदन करते हुए मुझे इस पर शोध कार्य की अनुमति प्रदान करेंगे।

कुमारदास कृत जानकीहरण में कृदन्त पदों का प्रयोग वैशिष्ट्य

रूपरेखा

प्रथम अध्याय – महाकाव्य एवं व्याकरणशास्त्र का स्वरूप

(क) महाकाव्य का सामान्य परिचय

(ख) व्याकरण शास्त्र का सामान्य परिचय

(ग) कुमारदासकृत जानकीहरण का परिचय

द्वितीय अध्याय – सन्धि एवं समास विमर्श

(क) जानकीहरण में प्रयुक्त सन्धि पदों का विवेचन

(ख) जानकीहरण में प्रयुक्त सामासिक पदों का विवेचन

तृतीय अध्याय – कारक–विमर्श

(क) कारक–अर्थ एवं स्वरूप

(ख) जानकीहरण में प्रयुक्त कारक प्रयोगों का विवेचन

चतुर्थ अध्याय –जानकीहरण महाकाव्य में प्रयुक्त कृदन्त पदों का संग्रह

(क) पुल्लिङ्गान्त कृदन्त

(ख) स्त्रीलिङ्गान्त कृदन्त

(ग) नुपुंसकान्त कृदन्त

(घ) विशेषण के रूप में कृदन्त

(ङ) विशेष्य के रूप में कृदन्त

पंचम अध्ययन – कृदन्त पदों का प्रयोग वैशिष्ट्य

(क) प्रसङ्ग के अनुसार कृदन्त वैशिष्ट्य

(ख) अर्थ के अनुसार कृदन्त वैशिष्ट्य

(ग) वक्ता–वाच्य प्राधान्य के अनुसार कृदन्त वैशिष्ट्य

(घ) व्यङ्ग्यार्थ प्रतिपादन में कृदन्त का प्रयोग वैशिष्ट्य

षष्ठ अध्याय – जानकीहरण का भाषा–वैशिष्ट्य

(क) भाषा विज्ञान की दृष्टि से

(ख) साहित्य की दृष्टि से भाषा–सौन्दर्य

(ग) व्याकरणिक प्रयोगों में अभिव्यक्त माधुर्य

उपसंहार–

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अष्टाध्यायी –चन्द्रलेखा, हिन्दीव्याख्यायुतानेकोपयोगिविषयै–रूपबृहहिता सूत्रपाठ–सूत्रवार्तिककोदाहरणानां सूच्या चान्विता, शर्मा ईश्वरचन्द्र शर्मा चौखम्बा–पब्लिकेशन वाराणसी, 2002

सिद्धान्तकौमुदी – पाण्डेय, उमेश चन्द्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मध्यसिद्धान्त कौमुदी– मध्यमनोरमा–मध्यमनोरमापूरणी संस्कृत–हिन्दी व्याख्याद्वयोपेता सम्पादक चौधरी डॉ0 अर्कनाथ, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय जयपुर। नगर, दिल्ली, 1988

काशिका – वेदालंकार, रघुवीर, चौखम्बा ओरियन्टालिया दिल्ली, प्रथम भाग–2006, द्वितीय भाग–2010

कारकीयम – महर्षि दयानन्द सरस्वती–वैदिक ग्रन्थालय अजमेर 1979

सामासिक :– महर्षि दयानन्द सरस्वती–वैदिक ग्रन्थालय अजमेर 1979

स्त्रैणतद्धित – महर्षि दयानन्द सरस्वती–वैदिक ग्रन्थालय अजमेर, 1979

पाणिनीय परिभाषा सूत्र विमर्श – सम्पादक–केलकर पूर्णिमा, दुर्गा पब्लिकेशन दिल्ली 2003

महाभाष्यम् (प्रदीपोद्योतभासितम्) – पतंजलिः, सम्पादक–शास्त्री, भार्गव, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, जवाहर 1997

आधुनिक शोध प्रणाली – मिश्र, महेन्द्र कुमार, मार्क पब्लिसशर्स, जयपुर, 2009

संस्कृत वाड्मय का बृहद् इतिहास – उपाध्याय, बलदेव उ0 प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ,

संस्कृत वाड्मय का बृहद् इतिहास – पाण्डेय, ओमप्रकाश, उ0 प्र0 संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 1997

संस्कृत व्याकरण का उद्भव एवं विकास – वर्मा, सत्यकाम, मोतीलाल बनारसदास दिल्ली, 1991

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास – मीमासंक, युधिष्ठिर, रामलाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत, हरियाणा, 1994

कोष ग्रन्थ

1—पारिजात कोश— शर्मा, ईश्वरचन्द्र, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2004

2—शब्दकल्पद्रुम — देव, राजा राधाकानत चौखम्भा संस्कृत सीरीज, वाराणसी, 1967

3—संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ— शर्मा, द्वारिकाप्रसाद चतुर्वेदी, इलाहाबाद, 1957

4—संस्कृत साहित्य कोश — सेमवाल, श्रीकृष्ण, दिल्ली संस्कृत अकादमी, 1996

5—संस्कृत हिन्दी कोश— आप्टे, वामन शिवराम मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली इलाहाबाद, 1996—69

6—संस्कृत व्याकरण — परिभाषिककोश, सम्पादक कुमार अवनीन्द्र परिमल पब्लिकेशन दिल्ली।

पत्र एवं पत्रिकाएँ

क्र. सं.	पत्र / पत्रिकाएँ	प्रकाशन	वर्ष
1.	शोध प्रभा (त्रैमासिक पत्रिका)	राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	1998
2.	संवित् (त्रैमासिक पत्रिका)	भारतीय विद्या भवन मुम्बई	1982
3.	सुरभारती	सस्कृत महाविद्यालय बड़ौदा	1983
4.	सामनस्यम्	बृहद् गुजरात संस्कृत परिषद, अहमदाबाद देववाणी परिषद्, दिल्ली	2002
5.	अर्वाचीन संस्कृतम् (त्रैमासिक पत्रिका)	देववाणी परिषद्, दिल्ली	1999
6.	लोक संस्कृतम्	संस्कृत कार्यालय श्री अरविन्द आश्रम, पॉण्डिचेरी	1984
7.	विश्रवभाषा (त्रैमासिक पत्रिका)	विश्रव संस्कृत प्रतिष्ठान वाराणसी (उ.प्र.)	1998

Websites

1. www.srijanshilpi.com
2. www.sanskribhashi.blogspot.in
3. www.sahiya_akademi.gov.in
4. www.sanityakunj.net